चीन की छात्रा चेनवै अब दीक्षा तो थाईलैंड के छात्र चुई फांमिंग आशीष के नाम से जाने जाते हैं

विदेशों से हिंदी सीखने आए छात्र, भाषा इतनी पसंद आई कि नाम ही बदल लिया

खाईदेम अथोबा मैतै | नागपुर

हिंदी दिवस विशेष

महाराष्ट्र के वर्धा में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में कई देशों के छात्र हर साल हिंदी सीखने पहुंचते हैं। उन्हें यह भाषा इतनी पसंद आई कि उन्होंने अपनी पहचान (नाम) भी हिंदी में बना ली। वे अब विश्व में अपने हिंदी नामों से ही पहचाना जाना पसंद कर रहे हैं। यही कारण है कि चीन से हिंदी सीखने पहुंची छात्रा चेनवै अब दीक्षा नाम से तो थाईलैंड के छात्र चुई फांमिंग आशीष नाम से जाने जाते हैं। इसी तरह थाईलैंड के छात्र शगभिरि, सुवर्ण दिव्य नाम से तो चीन की छात्रा तान श्यूरान करीना नाम को अपना चुकी हैं। यहां हर साल विश्व के कई देशों के करीब 40 से अधिक छात्र हिंदी सीखने पहुंचते हैं। यहां प्रत्येक छात्रों का सबसे पहले हिंदी में नया नाम रखा जाता है। इसमें बहुत से छात्र ऐसे हैं जो विश्वविद्यालय में पढ़ाई पूरी करने के बाद भी अपने हिंदी नामों को नहीं छोड़ते।

▪ विदेशी छात्रों के साथ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के शिक्षकगण।

विश्व में हिंदी के प्रचार के लिए खुला विश्वविद्यालय

विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए वर्धा में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय 2001 में खोला गया था। यहां हिंदी विषय पर हर साल समय-समय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी होती रहती है। यहां कई देशों से आए छात्रों में से कुछ मात्र हिंदी इसलिए सीखना चाहते हैं ताकि वे भारत की संस्कृति और धार्मिक महत्व को समझ सकें।

इन देशों के छात्र हिंदी सीखने पहुंचे

इस साल चीन, मॉरीशस, थाईलैंड, श्रीलंका, हंगरी, इटली, जापान, बेल्जियम, अमेरिका, स्कॉटलैंड आदि देशों के 43 छात्र हिंदी सीखने पहुंचे हैं। वे हिंदी से जुड़े अलग-अलग कोर्स कर रहे हैं जो छह माह से लेकर एक साल तक के हैं।

विश्व के 30 से अधिक देशों में पढ़ी जाती है हिंदी

हिंदी विश्व के तीस से अधिक देशों में पढ़ी व लिखी जाती है। करीब 176 विश्वविद्यालयों ने उसके लिए अध्यापन केंद्र खुले हुए हैं। इसका मुख्य मकसद हिंदी का प्रचार-प्रसार है।

वे खुद ही हिंदी नाम अपना रहे हैं

वर्धा विश्वविद्यालय भाषा एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्र के प्रभारी डॉ. रवि कुमार का कहना है कि अपने विश्वविद्यालय की परंपरा है कि यहां जो भी विदेशी छात्र हिंदी पढ़ने आता है उसे हिंदी में एक नाम उसकी सहमति से दिया जाता है। अंतरराष्ट्रीय छात्रावास के अधीक्षक अनिर्बाण घोष का कहना है कि यह नाम वे चाहें तो विश्वविद्यालय में पढ़ने के बाद छोड़ सकते हैं, मगर इसमें से कुछ लोग इसे ही आगे जारी रखना चाहते हैं। यहां के सहायक कुलसचिव डॉ. ज्योतिष पायेंग का कहना है कि छात्र खुद कहते हैं कि वे अब हिंदी को ही मुख्य भाषा बनाएंगे इसलिए हिंदी के नाम ही उचित है।

इनका कहना है...

अब हिंदी नाम ही मेरी पहचान

मैं चीन से वर्धा के महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में हिंदी सीखने आई हूं। मुझे यह भाषा इतनी पसंद आई कि अब इसी विषय की शिक्षिका बनना चाहती हूं। यहां आने के बाद मेरा नाम चेनवै से दीक्षा हो गया। मुझे यह नाम इतना पसंद आया कि अब यही मेरी पहचान बन गई है।

-चेनवै, चीन की छात्रा

अब हिंदी पर शोध कर रहा हूं

मैं थाईलैंड में व्याख्याता हूं। थाईलैंड विश्वविद्यालय में करीब 200 छात्रों को मैं हिंदी पढ़ाता हूं, उसके साथ-साथ मैं हिंदी साहित्य और थाई साहित्य को लेकर शोध भी कर रहा हूं। इससे दोनों देशों की संस्कृति को समझने में मदद मिलेगी। यहां आने से पहले मेरा नाम शगभिरि था, मगर अब मेरा नाम सुवर्ण दिव्य है। यह हिंदी की देन समझता हूं।

-शगभिरि, थाईलैंड का छात्र

तान श्यूरान की जगह करीना नाम से बुलाते हैं

मेरा हिंदी पढ़ने का उद्देश्य है, आगे चलकर एक अनुवादक बनना, जिससे चीन और भारत के साहित्य को लोगों तक पहुंचाया जा सके। मुझे भारत और हिंदी भाषा बहुत अच्छी लगती है। मुझे यहां मिले हिंदी नाम करीना इतना पसंद है कि मेरे घर वाले भी मुझे अब इसी नाम से बुलाते हैं।

-तान श्यूरान, चीन की छात्रा

हिंदू धर्म को समझने हिंदी नाम अपना लिया

मैं विभिन्न देशों का साहित्य पढ़ना और समझना चाहता हूं, हिंदी साहित्य और हिंदू धर्म को समझने का प्रयास कर रहा हूं। मुझे भी चुई फांमिंग की जगह आशीष नाम से पहचाना जाना पसंद है। अब मैं इसी नाम को आगे बढ़ा रहा हूं।

-चुई फांमिंग, चीन का छात्र